International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197; Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 784-786

शिक्षा आधुनिकीकरण के साधन यंत्र के रूप में

प्रियंका सिंह

सहायक–आचार्या, शिक्षाशास्त्र विभाग, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

वर्तमान युग विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का युग हे इस युग में वैज्ञानिकों ने जो खोज की हैं, जो आविष्कार किये हैं और जो शोध किये हैं, उनसे समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। उनसे मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में भारी बदलाव आया है। कृषि, उद्योग, संचार, चिकित्सा, शिक्षा आदि जीवन के सभी क्षेत्र इससे प्रभावित हुए हैं। इस परिवर्तन को, बदलाव को, प्रगति और विकास को स्पष्ट करने के लिए विद्वानों ने आधुनिकीकरण जैसी अवधारणा का प्रयोग किया है। शिक्षा आधुनिकीकरण का साधन है, यह आधुनिकीकरण से प्रभावित भी होती है। आधुनिकीकरण के फलस्वरूप विषय–वस्तु, शिक्षण विधि, शिक्षण के उद्देश्य अनुशासन, शिक्षण तकनीकी आदि में परिवर्तन होता है। प्रस्तुत प्रसंग में यह बताया गया है कि किस प्रकार आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा एक साधन के रूप में सहायक होती है तथा आधुनिकीकरण के प्रभाव स्वरूप उत्पन्न नई–नई समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करती है।

शब्द संक्षेप

आधुनिकीकरण, आधुनिकीकरण और शिक्षा, आधुनिकीकरण के साधन यंत्र के रूप में, निष्कर्ष, सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

आधुनिकीकरण

आधुनिकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा नये व आधुनिक माने जाने वाले मूल्यों, व्यवहार के प्रतिमानों, ज्ञान, व्यवस्थाओं, तकनीकी आदि का प्रसार अथवा फैलाव किया जाता है। आधुनिकीकरण करने के लिए बड़ी–बड़ी इमारतों, कल कारखानों, कार्यालयों, वैयक्तिक समूहों आदि का निर्माण कर देने मात्र से ही काम नहीं चलता। प्रमुख आवश्यकता इस बात की होती है कि आधुनिक मूल्यों, आधुनिक जीवन का ढंग, आधुनिक आकांक्षाओं, आधुनिक ज्ञान की भूख, आधुनिक रुचियों आदि को भी जाग्रत अथवा विकसित किया जाये।

परम्परागत समाज को आधुनिक समाज में बदलना आधुनिकीकरण कहलाता है। आधुनिक समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसके द्वारा विज्ञान पर आधारित शिल्प विज्ञान को अपनाया जाना है। आधुनिक समाज, विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के विकास पर इतना अधिक बल देता हे कि उसका सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है और दोनों प्रकार के जीवन में कुछ मूलभूत परिवर्तन होते हैं, इन्हीं परिवर्तनों को आधुनिकीकरण कहा जाता है। आधुनिकीकरण परिवर्तन की प्रक्रिया है, जब समाज आधुनिक होता है तो प्राचीन व्यवस्थाओं से उसका सम्बन्ध टूटता जाता है, परन्तु इसका यह तात्पर्य नही होता है कि परम्परावाद और आधुनिकीकरण के बीच एक दीवार है। आधुनिकीकरण एक क्रमिक, मंद गति वाली, निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। आधुनिकीकरण एक अनुकरणात्मक प्रक्रिया नहीं है, यद्यपि सभी आधुनिकीकरण में कुछ न कुछ अनुकरण की मात्रा निहित होती है, यह एक गतिशीलता की प्रक्रिया है, जिसमें समाज गतिशील होता है, पुरानी व्यवस्था को छोड़कर नई तकनीकी अपनाता है और व्यवहार के नये मापदण्ड विकसित करता है।

आधुनिकीकरण वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास है, जब एक समाज आधुनिक होता है तो वह अंध–विश्वासों को छोड़कर अपने संसाधनों का प्रयोग आर्थिक विकास में करता है। कुछ विद्वानों पश्चिमीकरण को आधुनिकीकरण मानते हैं। उनके अनुसार यदि कोई समाज पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति को अपना रहा है तो इसका अर्थ यह है कि उसका आधुनिकीकरण हो रहा है। कुछ विद्वानों के अनुसार औद्योगीकरण और नगरीकरण ही आधुनिकीकरण है। औद्योगीकरण में श्रम विभाजन एवं विशेषीकरण के कारण मशीनों का प्रयोग से उत्पादन बड़े पैमाने पर बहुत बड़ी मात्रा में होने लगा। लोगों का गाँवों से नगरों की तरफ आगमन हुआ, जिससे बड़े–बड़े नगरों का विकास हुआ और उनके जीवन स्तर पर विशेष प्रभाव पड़ा। इस कारण आधुनिकीकरण का औद्योगीकरण और नगरीकरण से जोड़कर देखा जाता है।

आधुनिकीकरण की व्याख्या समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों और इतिहासकारों आदि ने अपने–अपने दृष्टिकोण से की है। समाजशास्त्रियों के अनुसार आधुनिकीकरण विभेदीकरण की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम एक समाज को दूसरे समाज से अलग करके देख सकते हैं। अर्थशास्त्रियों के अनुसार आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति नवीन वैज्ञानिक ढंगों का प्रयोग करते हुए उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का इस प्रकार उपयोग करता है जिससे वह उनका अधिकतम लाभ उठाते हुए राष्ट्र का आर्थिक विकास कर सके। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि व्यक्ति में कुछ नया सीखने, कुछ नया करने और नये परिवर्तनों को ग्रहण करने की इच्छा और कर्मशीलता आधुनिकीकरण की प्रक्रिया है। इतिहासकारों की दृष्टि से आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अतीत की समीक्षा करके उसके आधार पर नवीन ज्ञान–विज्ञान का प्रयोग करते हुए अपने वर्तमान व भविष्य को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। अतीत की अच्छाईयों और प्रासंगिक बातों को ग्रहण करता है, अप्रासंगिक बातों को छोड़ देता है। रहन–सहन व कार्य के नये–नये तरीके अपनाता है जिससे आधुनिकीकरण होता है।

इस प्रकार विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से आधुनिकीकरण की व्याख्या की है। वस्तुतः आधुनिकीकरण पश्चिमीकरण नहीं है। आधुनिकीकरण किसी देश की भौतिक संस्कृति में परिवर्तन होना ही नहीं है अपितु उस देश के बिस्वा, प्रथा, मूल्य तथा सर्वांग जीवन में परिवर्तन होना है। आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा सामाजिक ढाँचों में वांछित परिवर्तन लाया जा सकता है। आधुनिकीकरण को भी विद्वानों ने परिभाषित किया है। आधुनिकीकरण का अत्यन्त सरल व संक्षिप्त अर्थ है, वह प्रयास करना या ऐसा प्रभाव डालना जिससे की एक व्यक्ति, संस्था, समुदाय या समाज आधुनिक या नये समझे जाने वाले मूल्यों, विचारों, दृष्टिकोणों, संरचनाओं व संगठनों को अपनाने का प्रयास करे।

आधुनिकीकरण और शिक्षा

शिक्षा व सामाजिक आधुनिकीकरण में घनिष्ठ सम्बन्ध है। सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा अत्यन्त अनिवार्य है। जब तक

समाज के व्यक्ति शिक्षित नहीं होंगे, तब तक समाज में वांछित परिवर्तन लाना सम्भव नहीं है। अनेक अध्ययनों एवं सर्वेक्षणों से यह स्पष्ट होता है कि विकसित समाजों की विशेषता उनकी शिक्षा, उच्च स्तरीय तकनीकी का प्रयोग एवं वैज्ञानिकता का विकास है। शिक्षा की प्रक्रिया समाज में उद्देश्यपूर्ण ढंग से चलती रहती है प्रत्येक समाज अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा ही करता है। वह अपने सदस्यों के लिए शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करते है। समाज के बदलने पर शिक्षा का स्वरूप भी बदलता रहता है। यह चक्र कभी नहीं रूकता सदैव गतिमान रहता है। शिक्षा अपनी विविध भूमिकाओं द्वारा समाज में आधुनिकीकरण लाने का प्रयास करती है।

शिक्षा नवीन विचारों एवं धारणाओं के प्रचार एवं प्रसार का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह लोगों को परिवर्तन ग्रहण करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करती है तथा ऐसे वातावरण का सृजन करती है जिससे लोग वांछित परिवर्तनों को सरलतापूर्वक गहण करें। शिक्षा द्वारा ही समाज में लोग नये–नये विचारों, धारणाओं, कृषि एवं उत्पादन की नयी विधियाँ, रहन–सहन के नये तरीकों को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। शिक्षा आधुनिकीकरण के महत्व को स्पष्ट करके उनका प्रसार करके, उनमें उपस्थित बाधक कारकों को दूर करके परिवर्तन ग्रहण कराने में सहायता देती है। यही कारण है कि शिक्षित वर्ग परिवर्तनों को पहले अपनाता है और अशिक्षित वर्ग बाद में।

समाज की अनेक आवश्यकतायें होती है। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा भी आधुनिकीकरण से प्रभावित होती है। उदाहरणस्वरूप प्राचीन भारत में शिक्षा धर्म प्रधान थी धीरे–धीरे शिक्षा में भौतिकवाद की प्रधानता बढ़ी। अतः वर्तमान समय में शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, विद्यालय आदि में तेजी से परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

आधुनिकीकरण और शिक्षा के उद्देश्य :

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा के अधोलिखित उद्देश्य हैं:–

- तर्कपूर्ण चिन्तन का विकास
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास
- नेतृत्व के गुणों का विकास
- नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का विकास
- बौद्धिक क्षमताओं और कौशलों का विकास
- प्रजातांत्रित नागरिकता का विकास
- सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन
- राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास

आधुनिकीकरण और पाठ्यक्रम :

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में जो उद्देश्य बताये गये हैं, उनकी प्राप्ति के लिए ही आधुनिक पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिए :–

- पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों की प्रमुखता होनी चाहिए।
- पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर की शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए।
- अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने के कारण अंग्रेजी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। विभिन्न व्यवसायें के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था से ही आधुनिकीकरण को बढ़ावा मिलता है।
- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य तथा रचनात्मकता और सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने वाले विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा तथा मानव मूल्यों की शिक्षा का प्रावधान होना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा और समाज सेवा कार्यक्रमों की व्यवस्था होनी चाहिए।
- आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र बनाने के लिए स्त्री शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा आदि को भी महत्व दिया जाना चाहिए।
- विस्तार भाषण, शिविर, प्रतियोगितायें, प्रदर्शनियाँ, संग्रहालय, विज्ञान क्लब, पुस्तकालय, वाचनालय आदि का भी पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए।

आधुनिकीकरण और शिक्षण विधियाँ

आधुनिकीकरण की दृष्टि से परम्परागत शिक्षण विधियों के स्थान पर वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए। इन विधियों में प्रमुख हैं – योजना विधि, समस्या समाधान विधि, प्रदर्शन विधि, ह्यूरिस्टिक विधि, निरीक्षण विधि और भाषण विधि आदि।

आधुनिकीकरण और विद्यालय

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में सहयोग देने के लिए विद्यालय का वातावरण प्रजातांत्रिक होना चाहिए जिससे प्रत्येक बालक को अपनी प्रतिभा के विकास के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो सके। प्रतिभाशाली बालकों को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध होने चाहिए जिससे वे आगे चलकर किसी न किसी क्षेत्र में नेतृत्व कर सकें। विद्यालय में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की व्यापक व्यवस्था होनी चाहिए और उनमें भाग लेने के लिए बालकों को प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यालय का शैक्षिक वातावरण श्रेष्ठ होना चाहिए और प्राचार्य तथा शिक्षकों को अपने बालकों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

आधुनिकीकरण में शिक्षा की भूमिका का उल्लेख इस प्रकार है –

- शिक्षा परम्परा का विकल्प प्रस्तुत करती है और उन विकल्पों में निहित लाभों का सामने लाती है और उन मार्गों का निर्देशन करती है जिनसे नये लक्ष्य एवं उनसे सम्बद्ध प्रतिफल प्राप्त किये जा सकते हैं।
- शिक्षा लोगों को नवीन विचारधाराओं से परिचित कराती है और उनमें राष्ट्रीयता की भावना भर्ती है जिससे कि लोग अपनी समस्याओं और आवश्यकताओं को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देख सकें।
- शिक्षा समाज में अभिजात वर्ग को उत्पन्न करती है और शिक्षित अभिजात ही लोगों के आदर्श होते हैं, उनका अनुगमन करके ही लोग परम्परा से मुक्त होकर आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर होते हैं।
- शिक्षा गतिशीलता को बढ़ावा देती है।
- शिक्षा लोगों को आधुनिक और नवीन प्रतिभाओं से परिचित कराती है तथा उन अभिवृत्तियों और व्यवहार प्रतिमानों को समाप्त करने में योग देती है जो आधुनिकीकरण में बाधक है।

शिक्षा आधुनिकीकरण के साधन यंत्र के रूप में

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को गतिशील और तीव्र बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। जिन समाजों में शिक्षा की व्यापकता होती है और शिक्षा का उच्च स्तर होता है, उन्हीं समाजों में आधुनिकीकरण अधिक पाया जाता है। भारत में शिक्षा के बढ़ते हुए प्रचार और प्रसार के कारण ही आधुनिकीकरण के मूल्यों, औद्योगीकरण, नगरीकरण, नयी अर्थव्यवस्था, नयी प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक खोजों आदि को बढ़ावा मिला है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र बनाने में शिक्षा एक साधन के रूप में निम्नलिखित कार्य करती है :–

1. **व्यापक दृष्टिकोण का निर्माण** : शिक्षा व्यक्ति के दृष्टिकोण में व्यापकता लाती है जिससे वह प्राचीन रुढ़ियों, अन्ध–विश्वासों, संकीर्णताओं और पूर्वाग्रहों को छोड़कर नवीन और उपयोगी विचारों, आदर्शों और मूल्यों को अपनाने में सफल होता है।
2. **ज्ञान भण्डार में वृद्धि** : शिक्षा व्यक्ति का मानसिक और

बौद्धिक विकास करती है शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के साहित्य, दर्शन, प्रौद्योगिकी, व्यावसायिकता, प्रशासन, चिकित्सा, प्रबन्धन आदि से सम्बन्धित ज्ञान के भण्डार में वृद्धि होती है उसका चिन्तन तर्कपूर्ण और वैज्ञानिक बनता है।

3. **आर्थिक समृद्धि** : शिक्षा किसी देश की आर्थिक समृद्धि का महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा के द्वारा उत्पादन के नये–नये साधन विकसित होते हैं। प्रबन्धन में कुशलता आती है, श्रमिकों की कार्य कुशलता में वृद्धि होती है और नयी प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है।
4. **विशेषज्ञों का निर्माण** : शिक्षा ही एक मात्र ऐसा साधन है जो ऐसे वैज्ञानिकों, तकनीशियनों, योजनाकारों, प्रबन्धकों, इंजीनियरों, चिकित्सकों व शिक्षकों को तैयार करती है जो अपने ज्ञान व कौशल के द्वारा क्षेत्र में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान करते हैं।
5. **उच्च जीवन स्तर** : आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक है कि लोगों को श्रेष्ठ जीवन स्तर हो। शिक्षा लोगों को सीमित साधनों की सहायता से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करने की विधियों का ज्ञान कराती है। शिक्षा लोगों की आर्थिक उन्नति करने के साधन उपलब्ध कराती है। इस प्रकार शिक्षा लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।
6. **सामाजिक परिवर्तन में सहायक** : आधुनिकीकरण के लिए सामाजिक परिवर्तन आवश्यक है और शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण और सशक्त साधन है। सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से शिक्षा दो कार्य करती हैः एक – यथास्थिति की आलोचना अर्थात् यह बताना की वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में क्या दोष है और उन दोषों को दूर करने का क्या लाभ होगा और दूसरा – सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रयास करना अर्थात् नये परिवर्तनों के लिए भूमिका तैयार करना और उन परिवर्तनों को स्वीकार करने के लिए लोगों को तैयार करना।
7. **नवीनतम जानकारी प्रदान करने में सहायक** : आज का युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने संसार के मानचित्र को बदल दिया है। आये दिन नयी–नयी खोजें और आविष्कार हो रहे हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान के नये द्वार खुल रहे हैं। तीव्र गति से क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। आधुनिकीकरण के लिए लोगों को इन सबकी जानकारी होना आवश्यक है और यह कार्य शिक्षा ही करती है।
8. **परम्परा औरा आधुनिकता में समन्वय स्थापित करने में सहायक** : समाज में जब भी किसी प्रकार के परिवर्तन होते हैं तो सामाजिक व्यवस्था में असन्तुलन आ जाता है। असन्तुलन की यह स्थिति लोगों को अस्थिर करती है, उनमें असमंजसता पैदा करती है। वस्तुतः यह सोच उचित नहीं है कि जो पुराना है, जो परम्परायें हैं, वे सब बुरी हैं और जो नया है, आधुनिक है, वह सब अच्छा है। परम्परा और आधुनिकता दोनों में ही कुछ अच्छा है और कुछ बुरा है। आधुनिकीकरण के लिए यह आवश्यक है कि इन दोनों में समन्वय स्थापित किया जाये और यह कार्य शिक्षा के द्वारा किया जाता है। शिक्षा ही परम्परा और आधुनिकता में समन्वय स्थापित करती है जिससे समाज का आधुनिकीकरण होता है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जो किसी भी समाज कों आधुनिकीकरण की ओर ले जा सकती है लेकिन आधुनिकीकरण की भी अपनी कतिपय बुराइयाँ हैं, कमियाँ हैं, जिससे समाज को बचाना आवश्यक है और यह कार्य शिक्षा ही कर सकती है। अतएव एक व्यवस्थित, कल्याणकारी और सुनियोजित आधुनिकीकरण का विकास उत्तम शिक्षा व्यवस्था के द्वारा ही हो सकता है। यदि शिक्षा की समुचित योजना बनायी जाये और उसे कुशल दिशा निर्देश दिया जाये तो वह आधुनिकीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सार्थक योगदान कर सकती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि आधुनिकीकरण परिवर्तन की प्रक्रिया है जब समाज आधुनिक होता है तो प्राचीन व्यवस्थाओं से उसका सम्बन्ध टूटता जाता है, परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं होता है कि परम्परावाद और आधुनिकीकरण के बीच एक दीवार है। आधुनिकीकरण एक क्रमिक, मंद गति वाली, निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। आधुनिकीकरण का प्रमुख लक्षण विज्ञान तथा तकनीकी का विकास है। आधुनिकीकरण की यह अभिधारणा है कि विज्ञान तथा तकनीकी के प्रयोग से ही मानव कल्याण है। आधुनिकीकरण की इस अभिधारणा में शिक्षा अत्यधिक सहायक सिद्ध हुई है। शिक्षा आधुनिकीकरण के लिए दर्शायें एवं वातावरण तैयार करती है। यह सामाजिक परिवर्तन व आधुनिकीकरण की गति को तीव्र बनाती है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन व आधुनिकीकरण की सुरक्षा करती है तथा सामाजिक परिवर्तन व आधुनिकीकरण के दुष्प्रभावों को रोकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ला, सी0एम0ः शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2013
2. रुहेला, एस0पी0ः भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2012
3. मिश्रा, ऊषाः शिक्षा का समाजशास्त्र, न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012
4. विद्या भूषण एवं सचदेव, डी0आर0 : समाजशास्त्र के सिद्धान्त, किताब महल, इलाहाबाद, 2005
5. पणिक्कर, के0एन0ः ''शिक्षा, आधुनिकीकरण और विकास'' परिप्रेक्ष्य राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, वर्ष 18, अंक 3, दिसम्बर 2011